Minister of Women and Child Development and Minister of Minority Affairs Smt. Smriti Zubin Irani raised Point of Order under Rule 352 and 353

महिला और बाल विकास मंत्री तथा अल्पसंख्यक कार्य मंत्री **(**श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी**):** अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से एक पॉइंट ऑफ ऑर्डर, एक पूर्व वक्ता के बारे में, आपके ध्यान में लाना चाहती हूँ । रूल 352 और 353 के संरक्षण में आपसे मेरे तीन निवेदन हैं ।

एक ? महामहिम राष्ट्रपति जी को पवित्र सैंगोल की छत्रछाया में आपने हम सबकी ओर से स्वागत किया । उनके उद्बोधन के लिए हम सब उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं, किंतु सदन और महामहिम राष्ट्रपति जी के मध्य में जो पत्राचार है, निमंत्रण अथवा सदन को संबोधित करने वाली जितनी व्यवस्थाएं हैं, उस पर पूर्व वक्ता गौरव गोगोई जी ने जो आपत्तिजनक टिप्पणियां की हैं, मैं आपसे आग्रह करती हूं कि उन आपत्तिजनक टिप्पणियों को आप एक्सपंज करने की कृपा करें ।

दूसरा ? सर, बार-बार सदन की कार्यवाही और पीठ के द्वारा दिए गए जितने आदेश हैं, उनका जिस प्रकार से यहां पर उस सांसद ने अपनी राजनीतिक व्यवस्था के लिए दुरुपयोग किया, आपके बार-बार टोकने के बावजूद किया, वह भी आपत्तिजनक व्यवस्था है, जिसके लिए मेरा आपसे आग्रह है कि उसको भी आप एक्सपंज करें ।

सर, मेरा मेरा तीसरा आग्रह है कि लोकतंत्र की यह गरिमा है कि प्रधान मंत्री पद पर हमारे राष्ट्र के नागरिक चुन कर एक व्यक्ति को विद्यमान करते हैं । उस पद के लिए, उस गरिमामयी पद के लिए ? शब्द की जो उपाधि आज यहां पर, सदन के एक सदस्य ने इस्तेमाल की है, उसको भी आप एक्सपेंज करें । ? (व्यवधान)

मैं इतना कहना चाहूंगी कि उनका द्वेश नरेंद्र मोदी के खिलाफ हो सकता है, लेकिन गरिमाविहीन टिप्पणी प्रधान मंत्री पद के लिए न हो । ? (व्यवधान) इससे संसद भी आहत होती है और वह वोटर भी, जो लोकतांत्रिक तरीके से चुन कर अपने प्रतिनधि को सदन में भेजता है । ? (व्यवधान)

सर, मेरा अंतिम निवेदन आपसे नियम 352 और 353 के संदर्भ में यह है कि बार-बार इस वक्ता ने कहा कि हमें इस बात की शर्म है कि हम हिंदुस्तानी हैं और इसकी अनुभूति हमें वर्ष 2014 से पहले नहीं थी । सर, मैं कहना चाहूंगी, मैं स्वयं इस सदन में साक्षी रही हूँ, इस सदन में एक ही सांसद था, जिसने भारत तेरे टुकड़े होने के वाक्य का समर्थन सदन से बाहर किया था । भारतीय जनता पार्टी का एक भी सांसद ऐसा नहीं है, जिसने अपने पूरे जीवन काल में कभी भी इस बात का गौरव न किया हो कि हम इस देश में जन्मे हैं और हम हिंदुस्तानी हैं । तो इस प्रकार का जो आक्षेप लगाया गया है, मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इसको एक्सपंज करें । ? (व्यवधान) ये अपनी राजनीति बाहर करते रहें, लेकिन राष्ट्रनीति का अपमान इस सदन में नहीं होगा । ? (व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई **:** सर, उस भाषण के शब्द, जो आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने दक्षिण कोरिया में इस्तेमाल किया है, उसका रिकॉर्ड आप देख लें ।

माननीय अध्यक्ष **:** चलो छोड़ो ।

डॉ. काकोली घोष दस्तीदार ।